संदेश

देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी को 2 अक्टूबर 2014 को 'स्वच्छ भारत अभियान' की नींव क्यों रखनी पड़ी? हम स्वच्छता को अपनी दिनचर्या में क्यों शामिल नहीं कर पा रहे हैं? हम अपने स्वास्थ्य के प्रति अपनी सोच और व्यवहार में बदलाव क्यों नहीं ला पा रहे हैं?

हम अपने स्वास्थ्य के प्रति अपनी सोच और व्यवहार में बदलाव क्यों नहीं ला पा रहे हैं? ये वाक्य मन में एक प्रश्न की तरह कौंध रहे हैं। इन प्रश्नों के उत्तर आज की युवा पीढ़ी की जागरूकता में निहित हैं, बशर्ते वे अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरी निष्ठा से निभाएँ और लोगों को स्वच्छता का महत्व समझाएँ। इसलिए, सभी बच्चों को अपने घर, अपने मोहल्ले, अपने गाँव, अपनी कक्षा और अपने विद्यालय में स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए और अपने देश की प्रगति और विकास में योगदान देना चाहिए।

सभी अभिभावकों एवं राष्ट्र निर्माताओं (शिक्षकों) से भी अनुरोध है कि वे भावी पीढ़ी एवं देश के बेहतर कल के लिए युवा पीढ़ी का समय पर मार्गदर्शन करते रहें।

एक कहावत है कि "स्वच्छता ईश्वर की ओर अगला कदम है।" अगर हम इसका प्रभावी ढंग से पालन करें, तो आने वाले वर्षों में पूरा देश ईश्वर का निवास बन जाएगा। हमें अपने जीवन में स्वच्छता बनाए रखने की आवश्यकता है। एक स्वस्थ देश और स्वस्थ समाज के लिए आवश्यक है कि उसके नागरिक हर व्यवसाय में स्वस्थ और स्वच्छ रहें।

स्वच्छता पखवाड़ा सिर्फ़ एक अभियान नहीं है - यह एक ज़्यादा ज़िम्मेदार और जागरूक समाज के निर्माण की दिशा में एक आंदोलन है। स्वच्छता न केवल हमारे स्वास्थ्य के लिए, बल्कि हमारे ग्रह की भलाई के लिए भी ज़रूरी है। कचरे का उचित निपटान, एकल-उपयोग वाले प्लास्टिक का उपयोग न करना और स्वच्छता बनाए रखना जैसे छोटे-छोटे कार्यों से हम एक बड़े उद्देश्य में योगदान दे सकते हैं। इस स्वच्छता पखवाड़ा में, आइए हम सिर्फ़ कुछ दिनों के लिए ही इसमें भाग न लें, बल्कि स्वच्छता को अपनी आदत बना लें। आइए हम वह बदलाव लाएँ जो हम अपने लिए, अपने समुदाय के लिए और अपने देश के लिए देखना चाहते हैं।

स्वच्छता पखवाड़ा सभी छात्रों को याद दिलाता है कि स्वच्छता की शुरुआत हमसे होती है। एक स्वच्छ कक्षा,विद्यालय और खेल का मैदान एक स्वस्थ मन और स्वस्थ शरीर का निर्माण करने में मदद करते हैं। आइए, हम कूड़ा-कचरा कूड़ेदान में डालने, अपने आस-पास के वातावरण को साफ़-सुथरा रखने और स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने का संकल्प लें। स्वच्छ छात्र, स्वच्छ विद्यालय और स्वच्छ राष्ट्र!

स्वच्छता सिर्फ़ एक ज़िम्मेदारी नहीं, बल्कि जीवन जीने का एक तरीका है। आइए, इस स्वच्छता पखवाड़े पर मिलकर एक स्वच्छ, हरित और स्वस्थ भारत का निर्माण करें। हर कदम महत्वपूर्ण है - आइए अपने आस-पास के वातावरण से शुरुआत करें।

प्राचार्य